सुविचार– अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

ऋषि की सीख ने बदल दिया उद्दंड राजकुमार का जीवन

राजा भद्रसिंह अपने राज्य में न्याय और नैतिकता के लिए प्रसिद्ध थे. वे मानते थे कि राजा का सबसे बड़ा धर्म अपनी प्रजा की रक्षा करना और उसके सुख-दुख में साथ खड़ा होना है. उनके शासन में लोग सुरक्षित और प्रसन्न थे. लेकिन राजा की सबसे बड़ी चिंता उनका पुत्र था. राजकुमार महाउत्पाति नाम के अनुरूप ही अत्यंत उद्दंड था. उसे अपनी शक्ति और राजघराने से मिलने वाले अधिकारों का घमंड था. वह कभी किसी व्यापारी को परेशान करता, कभी सैनिकों को बेवजह आदेश देता और कभी आम लोगों के साथ दुर्व्यवहार करता. लोग उसके व्यवहार से परेशान थे, लेकिन राजपुत्र होने के कारण उसके खिलाफ शिकायत करने का साहस किसी में नहीं था.

धीरे-धीरे राजकुमार का व्यवहार इतना बिगड़ गया कि पूरे राज्य में लोग उससे भयभीत रहने लगे. जब राजा भद्रसिंह को इसकी जानकारी मिली तो उन्हें बहुत दुख हुआ. उन्होंने बेटे को कई बार समझाया. उन्होंने उसे अच्छे आचार-विचार वाले शिक्षकों के पास भेजा. तर्कशास्त्रियों और विद्वानों ने भी उसे समझाने का प्रयास किया. यहां तक कि मनोचिकित्सकों की सहायता भी ली गई, लेकिन राजकुमार अपनी आदतों से बाहर नहीं निकल पाया. राजा चिंतित थे कि यदि यही स्थिति रही तो भविष्य में उनका राज्य ऐसे शासक के हाथ में चला जाएगा, जो अपनी प्रजा के सुख की जगह अपने अहंकार को महत्व देगा.

इसी बीच राज्य में औषधाचार्य नाम के एक ऋषि आए. राजा ने उन्हें अपनी चिंता बताई. ऋषि ने राजकुमार से मिलने का निर्णय लिया. उन्होंने प्रेम और धैर्य के साथ उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन राजकुमार पर तत्काल कोई प्रभाव नहीं पड़ा. एक दिन ऋषि राजकुमार को लेकर राजोद्यान में घूमने निकले. वहां अनेक प्रकार के पेड़-पौधे लगे हुए थे. घूमते-घूमते राजकुमार की नजर एक छोटे से पौधे पर पड़ी. उसने बिना सोचे उसकी कुछ पत्तियां तोड़ लीं और उन्हें मुंह में डालकर चबाने लगा. कुछ ही क्षण बाद उसका चेहरा बिगड़ गया. पत्तियां बेहद कड़वी थीं. राजकुमार को इतना क्रोध आया कि उसने आवेश में आकर उस पौधे को जड़ से उखाड़ दिया और दूर फेंक दिया. ऋषि यह देखकर नाराज हुए. उन्होंने राजकुमार से पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया. राजकुमार ने गुस्से में कहा, 'इसकी पत्तियों ने मेरा पूरा मुंह कड़वा कर दिया. मुझे इसका स्वाद पसंद नहीं आया, इसलिए मैंने इसे ही खत्म कर दिया. ऋषि कुछ क्षण शांत रहे. फिर गंभीर स्वर में बोले, 'बेटा, क्या तुम जानते हो कि यह कोई साधारण पौधा नहीं था. यह औषधीय पौधा था. इसकी पत्तियों से बनने वाली औषधियां अनेक रोगों में उपयोगी होती हैं. पेट से जुड़ी समस्याओं में भी इसका सेवन लाभकारी माना जाता है. तुमने केवल अपने स्वाद के कारण एक उपयोगी पौधे को नष्ट कर दिया. राजकुमार चुप हो गया. ऋषि ने आगे कहा, 'तुम्हें इसकी कड़वाहट तो तुरंत महसूस हो गई, लेकिन क्या कभी अपने स्वभाव की कड़वाहट महसूस की है. ऋषि बोले, 'जिस तरह इस पौधे की कड़वाहट तुम्हें कुछ क्षण भी सहन नहीं हुई, उसी तरह तुम्हारे व्यवहार की कड़वाहट से तुम्हारी प्रजा रोज परेशान होती है. तुम्हारे क्रोध और अहंकार से लोगों को दुख पहुंचता है. तुम्हारे पिता एक न्यायप्रिय राजा हैं, लेकिन तुम्हारे आचरण के कारण उनका भी अपयश हो रहा है. उसे पहली बार महसूस हुआ कि वह दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करता है. उसे अपने किए हुए काम याद आने लगे. जिन लोगों को उसने डराया था, जिनसे उसने दुर्व्यवहार किया था और जिनकी भावनाओं को उसने कभी महत्व नहीं दिया था– सब उसकी आंखों के सामने आने लगे. उसने ऋषि से कहा, 'गुरुदेव, आज मुझे समझ आया कि दूसरों को बदलने से पहले मनुष्य को स्वयं को बदलना चाहिए. मैं अपने व्यवहार को सुधारने का प्रयास करूंगा.'

इसके बाद राजकुमार के जीवन में बदलाव आने लगा. उसने लोगों से विनम्रता से बात करना शुरू किया. वह जरूरतमंदों की सहायता करने लगा और अपनी गलतियों के लिए क्षमा मांगने लगा. धीरे-धीरे प्रजा के मन से उसका भय दूर होने लगा. राजा भद्रसिंह ने जब अपने पुत्र में यह परिवर्तन देखा तो उनकी आंखों में खुशी के आंसू आ गए. अब उन्हें विश्वास हो गया था कि उनका पुत्र एक दिन उनके राज्य की जिम्मेदारी संभालने योग्य बनेगा.

सीख

हमारे शब्द और व्यवहार दूसरों के मन पर गहरा प्रभाव डालते हैं. इसलिए बोलने से पहले सोचें और हमेशा मधुर व सम्मानजनक व्यवहार करें. किसी में कमी दिखाई दे तो पहले अपने भीतर झांकना चाहिए.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर– 1. दो पेड़ दिखाई दे रहे 2. पहली तस्वीर की मछली नारंगी है 3. समुद्र के नीचे खजाने का संदूक है 4. हरा समुद्री जीव 5. बीच में केकड़ा गायब

बूझो तो जानें

▸ **मैं** गोल-गोल घूमता हूँ, लेकिन अपनी जगह से हिलता नहीं. मैं कौन हूँ?

उत्तर- पंखा

▸ ऐसी कौन-सी चीज है जिसे जितना खींचो, वह उतनी ही छोटी होती जाती है?

उत्तर- मोमबत्ती

▸ मैं पानी में पैदा होता हूँ, पानी में ही रहता हूँ, लेकिन पानी पीते ही मर जाता हूँ. मैं कौन हूँ?

उत्तर - नमक

▸ मेरे दाँत बहुत हैं, लेकिन मैं खाना नहीं खा सकता. मैं कौन हूँ?

उत्तर - कंघी

▸ मैं दिनभर आपके साथ रहता हूँ, लेकिन रात होते ही गायब हो जाता हूँ. मैं कौन हूँ?

उत्तर - परछाई

▸ ऐसी कौन-सी चीज है जो खुद गीली होती है, लेकिन दूसरों को सुखाती है?

उत्तर - तौलिया

▸ मैं बिना पंख के उड़ता हूँ और बिना आँखों के रोता हूँ. मैं कौन हूँ?

उत्तर - बादल

▸ जितना मुझे निकालते जाओ, मैं उतना ही बड़ा होता जाता हूँ. मैं कौन हूँ?

उत्तर - गड्ढा

▸ ऐसी कौन-सी चीज है, जिसे हम पहनते भी हैं और खाते भी हैं?

उत्तर - लौंग

▸ ऐसी कौन-सी चीज है जो खुद चलती नहीं, लेकिन लोगों को चलाती है?

उत्तर- सड़क

भूल भुलैया

हंसी-ठिठोली

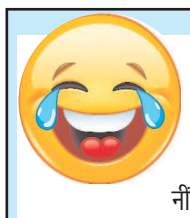

▸ टीचर – बताओ, सबसे ज्यादा नींद कब आती है?
बच्चा – जब टीचर कहती हैं, 'आँखें बंद करके सुनो!'

▸ पापा – बेटा, परीक्षा में कितने नंबर आए?
बेटा – पापा, नंबर तो अच्छे आए हैं...
पापा – कितने?
बेटा – बस, यही तो पता नहीं चल रहा!

▸ मम्मी – बेटा, दूध क्यों नहीं पी रहे हो?
बेटा – मम्मी, दूध तो पी लूँगा, लेकिन पहले बताओ...
मम्मी – क्या?
बेटा – इसमें होमवर्क तो नहीं मिला है ना

▸ टीचर – बताओ, स्कूल देर से क्यों आए?
बच्चा – मैडम, रास्ते में बोर्ड लगा था 'आगे स्कूल है, धीरे चलें.

▸ दोस्त – तुम रोज अपना होमवर्क क्यों भूल जाते हो?
बच्चा – क्योंकि मैं उसे घर पर ही छोड़कर आता हूँ

▸ मम्मी – तुम्हारे जूते इतने गंदे कैसे हो गए?
बच्चा – मम्मी, जूते बाहर गए थे... मैं तो घर में ही था

▸ टीचर – अगर तुम्हारे पास 10 आम हैं और मैंने 2 माँग लिए, तो तुम्हारे पास कितने बचेंगे?
बच्चा – 10 ही!

कविता

मेरे प्यारे शिक्षक

ज्ञान की ज्योति जलाते हैं,
सही राह हमें दिखाते हैं.
गलती पर समझाते प्यार से,
सपने सजाते हर बार से.

किताबों से दोस्ती करवाते,
जीवन का मतलब समझाते.
गुरु हैं हमारे सबसे प्यारे,
इनसे रोशन सपने हमारे.

जानकारी

फूलों का राजा : गुलाब

प्रकृति ने धरती को कई खूबसूरत उपहार दिए हैं, लेकिन गुलाब उनमें सबसे खास माना जाता है। अपनी आकर्षक सुंदरता, मधुर खुशबू और अनेक उपयोगों के कारण गुलाब सदियों से लोगों के दिलों में खास जगह बनाए हुए है. यही कारण है कि इसे दुनिया के सबसे प्रसिद्ध फूलों में गिना जाता है. गुलाब का इतिहास बहुत पुराना है. इसकी खेती हजारों वर्षों से की जा रही है. प्राचीन सभ्यताओं में भी गुलाब का उपयोग सजावट, इत्र बनाने और विशेष अवसरों पर किया जाता था. समय के साथ गुलाब की कई नई किस्में विकसित हुई और आज दुनिया में इसकी हजारों प्रजातियां मौजूद हैं.

गुलाब के रंगों का भी अपना महत्व है. लाल गुलाब प्रेम और सम्मान का प्रतीक माना जाता है. सफेद गुलाब शांति और पवित्रता को दर्शाता है. पीला गुलाब दोस्ती और खुशी का संदेश देता है, जबकि गुलाबी गुलाब स्नेह और प्रशंसा का प्रतीक माना जाता है. गुलाब केवल सुंदरता तक सीमित नहीं है. इसकी पंखुड़ियों से गुलाब जल और गुलाब का तेल तैयार किया जाता है, जिनका उपयोग सौंदर्य प्रसाधनों और पारंपरिक उपचारों में किया जाता है. गुलाब जल त्वचा को ताजगी देने और ठंडक पहुंचाने के लिए लोकप्रिय है. वहीं गुलकंद, जो गुलाब की पंखुड़ियों से बनाया जाता है, भारतीय घरों में लंबे समय से इस्तेमाल होता आया है. इसकी खुशबू में मौजूद प्राकृतिक तत्व मन को शांत करने और तनाव कम करने में मददगार माने जाते हैं. यही कारण है कि गुलाब की सुगंध का उपयोग अरोमा थेरेपी में भी किया जाता है. गुलाब का पौधा केवल बगीचे की शोभा नहीं बढ़ाता, बल्कि पर्यावरण के लिए भी उपयोगी है. इसके फूल मधुमक्खियों और अन्य छोटे जीवों को आकर्षित करते हैं, जिससे प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में मदद मिलती है. भारत में गुलाब का विशेष महत्व है. कई त्योहारों, समारोहों और धार्मिक आयोजनों में इसका उपयोग किया जाता है. बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, हर उम्र के लोगों को गुलाब की सुंदरता आकर्षित करती है. गुलाब हमें प्रकृति की एक महत्वपूर्ण सीख भी देता है.

सेहत का स्वादिष्ट खजाना है सेब

रोजमर्रा की जिंदगी में आसानी से मिलने वाला सेब अपने भीतर कई रोचक तथ्य समेटे हुए है। देखने में साधारण लगने वाला यह फल पोषण, कृषि और इतिहास तीनों दृष्टि से खास माना जाता है. सेब में आहार रेशा पाया जाता है, जो पाचन तंत्र के लिए उपयोगी माना जाता है. इसके अलावा इसमें विटामिन-सी और विभिन्न एंटीऑक्सीडेंट यौगिक भी मौजूद होते हैं. हालांकि किसी भी एक फल को सभी पोषक जरूरतों का विकल्प नहीं माना जा सकता, लेकिन संतुलित भोजन में सेब एक उपयोगी विकल्प हो सकता है.

सेब की एक खासियत इसकी किस्मों की विशाल विविधता है. दुनिया के अलग-अलग क्षेत्रों में इसकी अनेक किस्में उगाई जाती हैं. इनके रंग, आकार, मिठास, खट्टापन और बनावट में अंतर होता है. कुछ सेब कुरकुरे और मीठे होते हैं, जबकि कुछ का स्वाद हल्का खट्टा होता है. यही विविधता इसे ताजे फल के साथ-साथ खाद्य प्रसंस्करण के लिए भी उपयोगी बनाती है. सेब की कहानी केवल आधुनिक बाजार तक सीमित नहीं है. इसके जंगली पूर्वजों का संबंध मध्य एशिया के क्षेत्रों से माना जाता है. व्यापार और मानव प्रवास के साथ सेब की विभिन्न किस्में दूर-दूर तक पहुंचीं और धीरे-धीरे अलग-अलग क्षेत्रों की जलवायु के अनुसार इनकी खेती विकसित हुई. भारत में भी हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और उत्तराखंड जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में सेब की खेती महत्वपूर्ण है.

प्रेरक प्रसंग

सपने बड़े हों तो रास्ते खुद बनते हैं : राधाकृष्णन

दक्षिण भारत के एक साधारण परिवार में एक बच्चा रहता था. उसका नाम था सर्वपल्ली राधाकृष्णन। घर की परिस्थितियां बहुत सामान्य थीं, लेकिन इस बच्चे की आंखों में सपने बहुत बड़े थे. उसे पढ़ना बेहद पसंद था. जब दूसरे बच्चे खेल-कूद में समय बिताते, तब राधाकृष्णन किताबों की दुनिया में खोए रहते. उनके पास बहुत सारी किताबें खरीदने के साधन नहीं थे. फिर भी उन्होंने पढ़ाई के प्रति अपना उत्साह कभी कम नहीं होने दिया. जो किताबें मिलतीं, उन्हें ध्यान से पढ़ते और हर नई बात को समझने की कोशिश करते. उनके मन में हमेशा एक सवाल रहता, मैं इस दुनिया को और बेहतर तरीके से कैसे समझ सकता हूं.

राधाकृष्णन ने मेहनत के बल पर अपनी शिक्षा जारी रखी और आगे चलकर दर्शनशास्त्र के विद्वान बने. उन्होंने विश्वविद्यालयों में अध्यापन किया. उनकी कक्षाओं में विद्यार्थी केवल किताबों की बातें नहीं सीखते थे, बल्कि जीवन को समझने का नजरिया भी हासिल करते थे. राधाकृष्णन मानते थे कि शिक्षक का काम सिर्फ पाठ पढ़ाना नहीं है. शिक्षक विद्यार्थियों के भविष्य को दिशा देता है. वह बच्चों में आत्मविश्वास जगाता है और उन्हें सही रास्ते पर चलने की प्रेरणा देता है. उनकी विद्वता और सरल व्यक्तित्व के कारण देश-दुनिया में उनका सम्मान बढ़ता गया. उन्होंने कई महत्वपूर्ण विश्वविद्यालयों में शिक्षक और प्रोफेसर के रूप में काम किया. बाद में वे भारत के उपराष्ट्रपति बने और फिर देश के राष्ट्रपति पद तक पहुंचे. लेकिन इतनी बड़ी उपलब्धियों के बाद भी उनके भीतर का शिक्षक कभी नहीं बदला.

जब उनके कुछ विद्यार्थियों और मित्रों ने उनके जन्मदिन को विशेष रूप से मनाने की इच्छा जताई, तो उन्होंने कहा कि यदि उनके जन्मदिन को मनाना ही है, तो इसे शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाए. इसी भावना के कारण भारत में 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है. राधाकृष्णन का जीवन बच्चों के लिए एक सुंदर सीख है. उन्होंने दिखाया कि सफलता केवल बड़े साधनों से नहीं मिलती. यदि किसी व्यक्ति के पास सीखने की इच्छा, मेहनत करने का साहस और अपने लक्ष्य के प्रति ईमानदारी हो, तो वह कठिन से कठिन रास्ते को भी पार कर सकता है. इसलिए, जब भी पढ़ाई कठिन लगे, यह मत सोचिए कि आप नहीं कर सकते. खुद से कहिए मैं कोशिश करूंगा, सीखूंगा और आगे बढ़ूंगा.

बिंदु मिलाओ

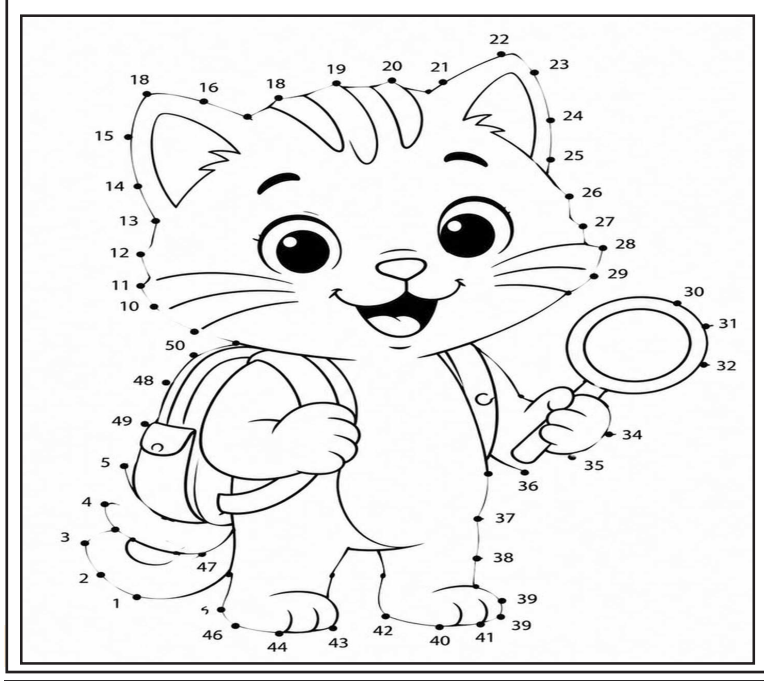

रंग भरो

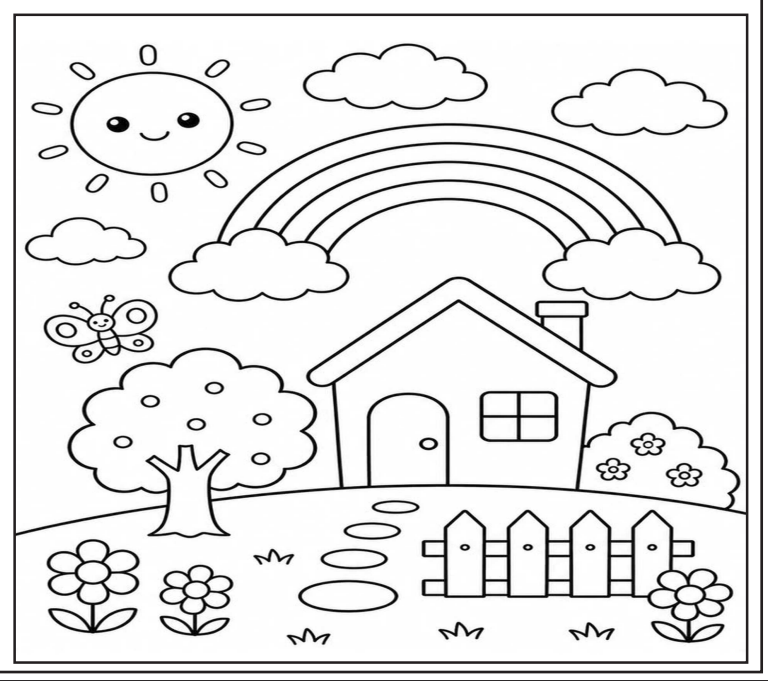

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**